जैन दर्शन में बंधन एवम् मोक्ष : एक अनुचिंतन

रेणु कुमारी

जैन शब्द की उत्पति 'जिन' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'विजयी' अर्थात् रागद्वेषादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला। राग–द्वेष पर विजय प्राप्त करने के कारण सभी तीर्थंकरों को 'जिन' की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। जैन–धर्मावलम्बी अपने धर्म प्रचारक सिद्धों को 'तीर्थंकर' कहते हैं और इनकी संख्या चौबीस बताते हैं। ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं। भागवतपुराण में ऋषभदेव का विस्तृत वर्णन है। तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे और ये ऐतिहासिक व्यक्ति थे इसमें कोई सन्देह नहीं। पार्श्वनाथ का काल 8वीं या 9वीं ई०पू० माना जाता है। अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान महावीर की ऐतिहासिकता में भी कोई संदेह नहीं है। ये छठी शताब्दी ई०पू० में हुए और ये महात्मा बुद्ध के समकालीन थे तथा आयु में उनसे काफी बड़े थे। जिस समय भारत में बौद्ध दर्शन का विकास हो रहा था उसी समय यहाँ जैन दर्शन का भी प्रचार–प्रसार हो रहा था। इस अर्थ में दोनों छठी शताब्दी में विकसित होने के कारण समकालीन दर्शन कहे जा सकते हैं।